



Mr. Bhavya Nagle

28 Jun 2010

11:55 AM

Itarsi

Model: Web-MyKundli

Order No: 119923801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 28/06/2010
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 11:55:00 घंटे
इष्ट _____: 15:45:40 घटी
स्थान _____: Itarsi
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 22:39:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:48:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:18:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:36:12 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:12 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:01:11 घंटे
सूर्योदय _____: 05:36:43 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:07:10 घंटे
दिनमान _____: 13:30:26 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 12:27:58 मिथुन
लग्न के अंश _____: 06:16:09 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: मकर - शनि
नक्षत्र-चरण _____: उत्तराषाढ़ा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: नकुल
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: भो-भोजराज
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1932	आषाढ़	7
पंजाबी	संवत : 2067	आषाढ़	14
बंगाली	सन् : 1417	आषाढ़	13
तमिल	संवत : 2067	आनी	14
केरल	कोल्लम : 1185	मिथुनम	14
नेपाली	संवत : 2067	आषाढ़	14
चैत्रादि	संवत : 2067	आषाढ़	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2067	ज्येष्ठ	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 19:56:24
जन्म तिथि _____ : 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : उत्तराषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 26:20:24 घंटे
जन्म योग _____ : उत्तराषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____ : 14:36:02 घंटे
जन्म योग _____ : ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
करण समाप्ति काल _____ : 07:02:38 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 29:55:55
भभोग _____ : 65:59:25
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 3 वर्ष 3 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____ : वैशाख
तिथि _____ : 4-9-14
दिन _____ : मंगलवार
नक्षत्र _____ : रोहिणी
योग _____ : वैधृति
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : कुम्भ
सूर्य _____ : कुम्भ
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : मीन
बुध _____ : धनु
गुरु _____ : मेष
शुक्र _____ : वृष
शनि _____ : मकर
राहु _____ : मिथुन

Shri Dadaji Jyotish kendra

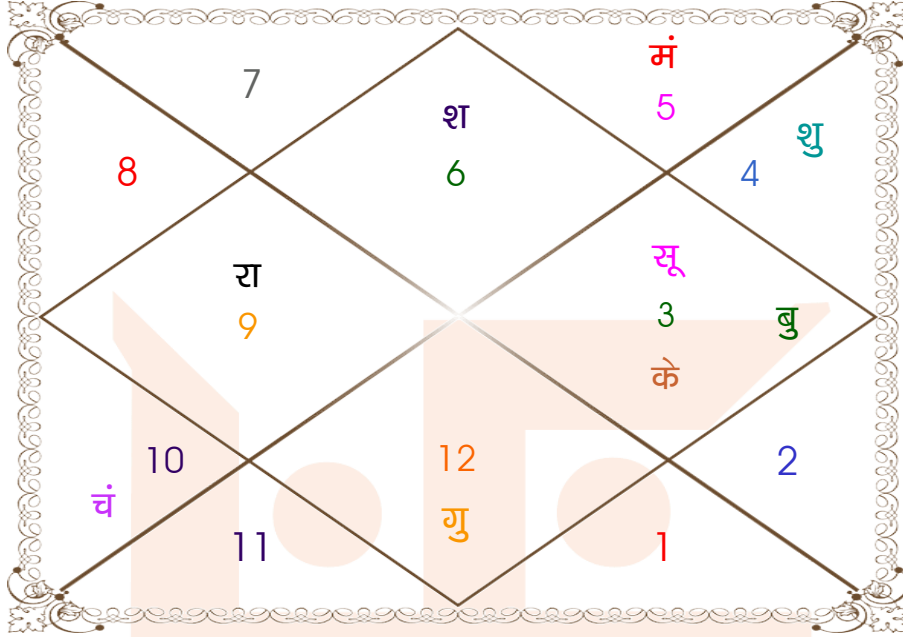
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

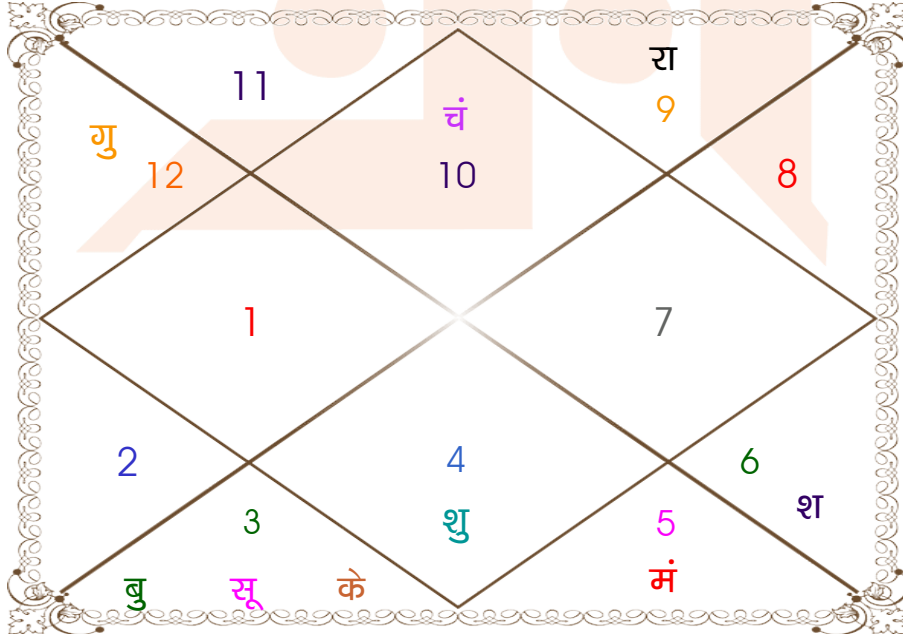
dadajijyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

गु		के सू बु
		शु
चं		मं
रा		श ल

लग्न कुंडली

के बु	सू	गु
शु		चं
मं	ल श	रा

विंशोत्तरी
सूर्य 3वर्ष 3मा 6दि
सूर्य

28/06/2010

05/10/2127

सूर्य	03/10/2013
चन्द्र	04/10/2023
मंगल	04/10/2030
राहु	03/10/2048
गुरु	03/10/2064
शनि	04/10/2083
बुध	04/10/2100
केतु	05/10/2107
शुक्र	05/10/2127

योगिनी
संकटा 4वर्ष 4मा 8दि
भद्रिका

05/11/2024

05/11/2029

भद्रिका	16/07/2025
उल्का	17/05/2026
सिद्धा	07/05/2027
संकटा	16/06/2028
मंगला	06/08/2028
पिंगला	15/11/2028
धान्या	16/04/2029
भ्रामरी	05/11/2029

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

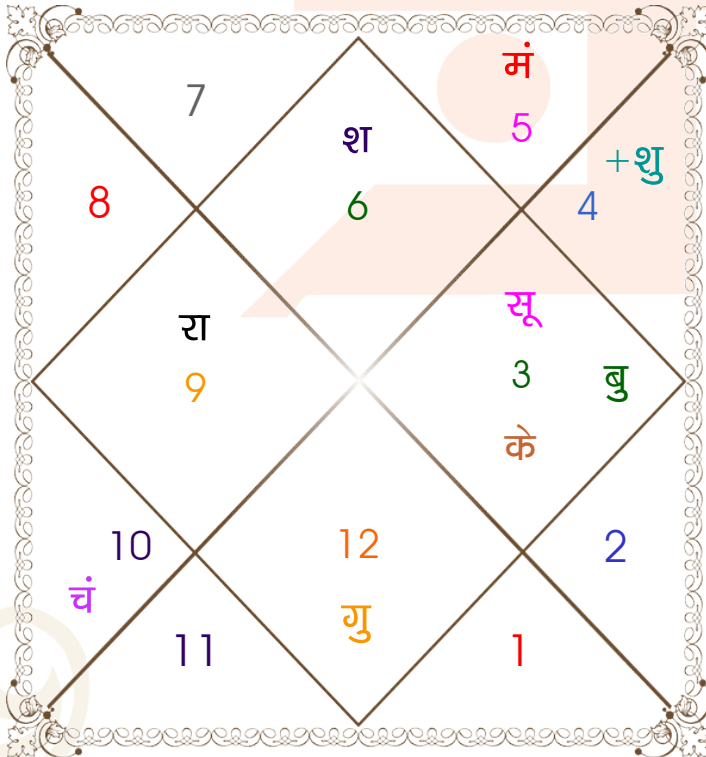
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न	कन्या	06:16:09	333:10:26	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	---
सूर्य	मिथु	12:27:58	00:57:12	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	सम राशि
चंद्र	मक	02:44:19	12:07:46	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	सम राशि
मंगल	सिंह	17:23:15	00:33:42	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	मित्र राशि
बुध	अ मिथु	12:10:26	02:11:07	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	स्वराशि
गुरु	मीन	08:22:37	00:04:44	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	शुक्र	स्वराशि
शुक्र	कर्क	22:06:39	01:08:53	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	सूर्य	शत्रु राशि
शनि	कन्या	04:30:19	00:02:49	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मित्र राशि
राहु	धनु	17:55:01	00:00:21	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंगल	नीच राशि
केतु	मिथु	17:55:01	00:00:21	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	सूर्य	नीच राशि
हर्ष	मीन	06:33:39	00:00:22	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
नेप	व कुंभ	04:29:46	00:00:50	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	---
प्लूटो	व धनु	10:02:20	00:01:32	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
दशम भाव	मिथु	06:16:03	--	मृगशिरा	--	5	बुध	मंगल	चंद्र	--

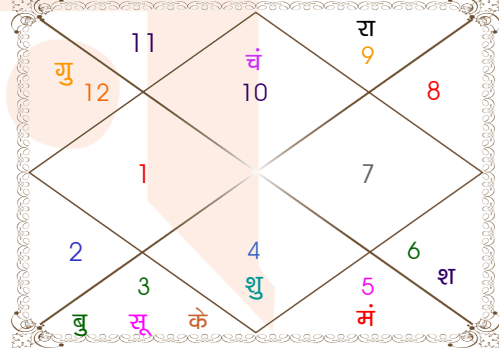
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:00:30

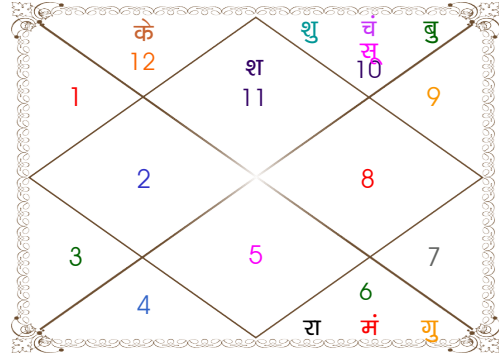
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 21:16:08	कन्या 06:16:09
2	कन्या 21:16:08	तुला 06:16:07
3	तुला 21:16:06	वृश्चिक 06:16:05
4	वृश्चिक 21:16:04	धनु 06:16:03
5	धनु 21:16:04	मकर 06:16:05
6	मकर 21:16:06	कुम्भ 06:16:07
7	कुम्भ 21:16:08	मीन 06:16:09
8	मीन 21:16:08	मेष 06:16:07
9	मेष 21:16:06	वृष 06:16:05
10	वृष 21:16:04	मिथुन 06:16:03
11	मिथुन 21:16:04	कर्क 06:16:05
12	कर्क 21:16:06	सिंह 06:16:07

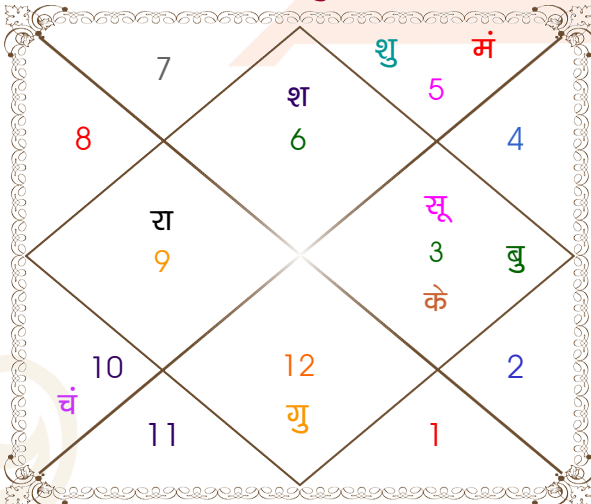
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	06:16:09
2	तुला	05:11:20
3	वृश्चिक	05:34:09
4	धनु	06:16:03
5	मकर	06:58:28
6	कुम्भ	07:21:52
7	मीन	06:16:09
8	मेष	05:11:20
9	वृष	05:34:09
10	मिथुन	06:16:03
11	कर्क	06:58:28
12	सिंह	07:21:52

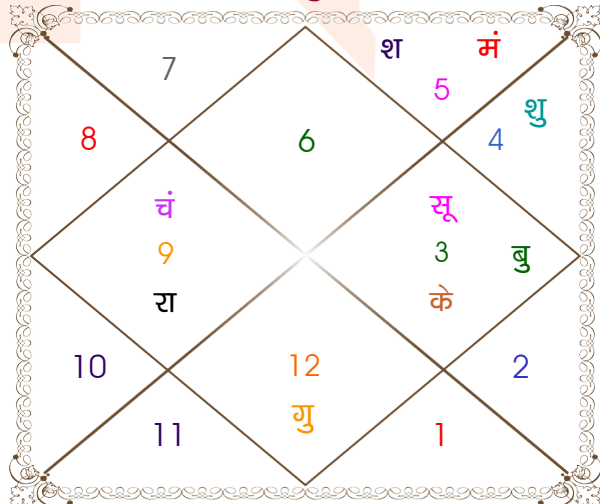
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 3 वर्ष 3 मास 6 दिन

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
28/06/2010	03/10/2013	04/10/2023	04/10/2030	03/10/2048
03/10/2013	04/10/2023	04/10/2030	03/10/2048	03/10/2064
00/00/0000	चंद्र 04/08/2014	मंगल 01/03/2024	राहु 16/06/2033	गुरु 21/11/2050
00/00/0000	मंगल 05/03/2015	राहु 20/03/2025	गुरु 10/11/2035	शनि 04/06/2053
00/00/0000	राहु 03/09/2016	गुरु 24/02/2026	शनि 15/09/2038	बुध 10/09/2055
28/06/2010	गुरु 03/01/2018	शनि 04/04/2027	बुध 04/04/2041	केतु 16/08/2056
गुरु 10/08/2010	शनि 04/08/2019	बुध 01/04/2028	केतु 22/04/2042	शुक्र 17/04/2059
शनि 23/07/2011	बुध 03/01/2021	केतु 28/08/2028	शुक्र 22/04/2045	सूर्य 03/02/2060
बुध 28/05/2012	केतु 04/08/2021	शुक्र 28/10/2029	सूर्य 17/03/2046	चंद्र 04/06/2061
केतु 03/10/2012	शुक्र 04/04/2023	सूर्य 05/03/2030	चंद्र 16/09/2047	मंगल 11/05/2062
शुक्र 03/10/2013	सूर्य 04/10/2023	चंद्र 04/10/2030	मंगल 03/10/2048	राहु 03/10/2064
शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
03/10/2064	04/10/2083	04/10/2100	05/10/2107	05/10/2127
04/10/2083	04/10/2100	05/10/2107	05/10/2127	00/00/0000
शनि 07/10/2067	बुध 02/03/2086	केतु 02/03/2101	शुक्र 03/02/2111	सूर्य 23/01/2128
बुध 16/06/2070	केतु 27/02/2087	शुक्र 03/05/2102	सूर्य 04/02/2112	चंद्र 23/07/2128
केतु 26/07/2071	शुक्र 28/12/2089	सूर्य 07/09/2102	चंद्र 04/10/2113	मंगल 28/11/2128
शुक्र 25/09/2074	सूर्य 03/11/2090	चंद्र 08/04/2103	मंगल 05/12/2114	राहु 23/10/2129
सूर्य 07/09/2075	चंद्र 04/04/2092	मंगल 05/09/2103	राहु 04/12/2117	गुरु 29/06/2130
चंद्र 07/04/2077	मंगल 01/04/2093	राहु 22/09/2104	गुरु 04/08/2120	00/00/0000
मंगल 17/05/2078	राहु 19/10/2095	गुरु 29/08/2105	शनि 05/10/2123	00/00/0000
राहु 23/03/2081	गुरु 24/01/2098	शनि 08/10/2106	बुध 05/08/2126	00/00/0000
गुरु 04/10/2083	शनि 04/10/2100	बुध 05/10/2107	केतु 05/10/2127	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 3 वर्ष 3 मा 10 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु 20/03/2025 24/02/2026	मंगल - शनि 24/02/2026 04/04/2027	मंगल - बुध 04/04/2027 01/04/2028	मंगल - केतु 01/04/2028 28/08/2028	मंगल - शुक्र 28/08/2028 28/10/2029
गुरु 04/05/2025 शनि 27/06/2025 बुध 14/08/2025 केतु 03/09/2025 शुक्र 30/10/2025 सूर्य 16/11/2025 चंद्र 15/12/2025 मंगल 03/01/2026 राहु 24/02/2026	शनि 29/04/2026 बुध 25/06/2026 केतु 19/07/2026 शुक्र 24/09/2026 सूर्य 14/10/2026 चंद्र 17/11/2026 मंगल 11/12/2026 राहु 09/02/2027 गुरु 04/04/2027	बुध 26/05/2027 केतु 16/06/2027 शुक्र 15/08/2027 सूर्य 02/09/2027 चंद्र 02/10/2027 मंगल 24/10/2027 राहु 17/12/2027 गुरु 03/02/2028 शनि 01/04/2028	केतु 09/04/2028 शुक्र 04/05/2028 सूर्य 12/05/2028 चंद्र 24/05/2028 मंगल 02/06/2028 राहु 24/06/2028 गुरु 14/07/2028 शनि 07/08/2028 बुध 28/08/2028	शुक्र 07/11/2028 सूर्य 28/11/2028 चंद्र 03/01/2029 मंगल 27/01/2029 राहु 01/04/2029 गुरु 28/05/2029 शनि 04/08/2029 बुध 03/10/2029 केतु 28/10/2029
मंगल - सूर्य 28/10/2029 05/03/2030	मंगल - चंद्र 05/03/2030 04/10/2030	राहु - राहु 04/10/2030 16/06/2033	राहु - गुरु 16/06/2033 10/11/2035	राहु - शनि 10/11/2035 15/09/2038
सूर्य 03/11/2029 चंद्र 14/11/2029 मंगल 21/11/2029 राहु 11/12/2029 गुरु 28/12/2029 शनि 17/01/2030 बुध 04/02/2030 केतु 11/02/2030 शुक्र 05/03/2030	चंद्र 22/03/2030 मंगल 04/04/2030 राहु 06/05/2030 गुरु 03/06/2030 शनि 07/07/2030 बुध 06/08/2030 केतु 19/08/2030 शुक्र 23/09/2030 सूर्य 04/10/2030	राहु 01/03/2031 गुरु 10/07/2031 शनि 13/12/2031 बुध 01/05/2032 केतु 28/06/2032 शुक्र 09/12/2032 सूर्य 27/01/2033 चंद्र 19/04/2033 मंगल 16/06/2033	गुरु 11/10/2033 शनि 27/02/2034 बुध 01/07/2034 केतु 21/08/2034 शुक्र 14/01/2035 सूर्य 27/02/2035 चंद्र 11/05/2035 मंगल 01/07/2035 राहु 10/11/2035	शनि 22/04/2036 बुध 17/09/2036 केतु 17/11/2036 शुक्र 09/05/2037 सूर्य 30/06/2037 चंद्र 25/09/2037 मंगल 25/11/2037 राहु 30/04/2038 गुरु 15/09/2038
राहु - बुध 15/09/2038 04/04/2041	राहु - केतु 04/04/2041 22/04/2042	राहु - शुक्र 22/04/2042 22/04/2045	राहु - सूर्य 22/04/2045 17/03/2046	राहु - चंद्र 17/03/2046 16/09/2047
बुध 25/01/2039 केतु 21/03/2039 शुक्र 23/08/2039 सूर्य 09/10/2039 चंद्र 25/12/2039 मंगल 18/02/2040 राहु 06/07/2040 गुरु 07/11/2040 शनि 04/04/2041	केतु 26/04/2041 शुक्र 29/06/2041 सूर्य 18/07/2041 चंद्र 19/08/2041 मंगल 11/09/2041 राहु 07/11/2041 गुरु 28/12/2041 शनि 27/02/2042 बुध 22/04/2042	शुक्र 22/10/2042 सूर्य 16/12/2042 चंद्र 17/03/2043 मंगल 20/05/2043 राहु 31/10/2043 गुरु 25/03/2044 शनि 15/09/2044 बुध 17/02/2045 केतु 22/04/2045	सूर्य 09/05/2045 चंद्र 05/06/2045 मंगल 24/06/2045 राहु 12/08/2045 गुरु 25/09/2045 शनि 16/11/2045 बुध 02/01/2046 केतु 21/01/2046 शुक्र 17/03/2046	चंद्र 02/05/2046 मंगल 02/06/2046 राहु 24/08/2046 गुरु 05/11/2046 शनि 30/01/2047 बुध 18/04/2047 केतु 20/05/2047 शुक्र 19/08/2047 सूर्य 16/09/2047

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajiJyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	कन्या, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	नृसिंह
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

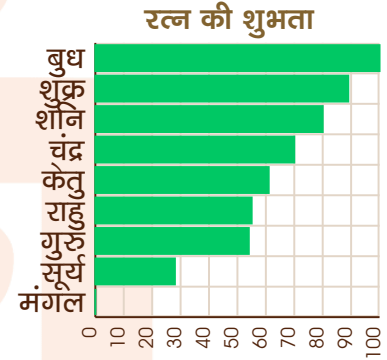
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	89%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	80%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
मोती	चंद्र	70%	सन्तति सुख, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	61%	व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	55%	सुख, दम्पति
पुखराज	गुरु	54%	दम्पति, सुख
माणिक्य	सूर्य	28%	व्यावसायिक हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	व्यय, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	03/10/2013	52%	77%	0%	100%	61%	77%	67%	34%	47%
चंद्र	04/10/2023	41%	83%	0%	100%	54%	89%	80%	34%	47%
मंगल	04/10/2030	41%	77%	0%	100%	61%	89%	80%	34%	67%
राहु	03/10/2048	3%	58%	0%	100%	54%	95%	86%	67%	47%
गुरु	03/10/2064	41%	77%	0%	100%	67%	77%	80%	55%	61%
शनि	04/10/2083	3%	58%	0%	100%	54%	95%	92%	61%	47%
बुध	04/10/2100	41%	58%	0%	100%	54%	95%	80%	55%	61%
केतु	05/10/2107	3%	58%	0%	100%	54%	95%	67%	34%	73%
शुक्र	05/10/2127	3%	58%	0%	100%	54%	100%	86%	61%	67%

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
अष्टम स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

सम
शुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख
सन्तति सुख
शत्रु व रोग मुक्ति
दुर्घटना
व्यय

Shri Dadaji Jyotish kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

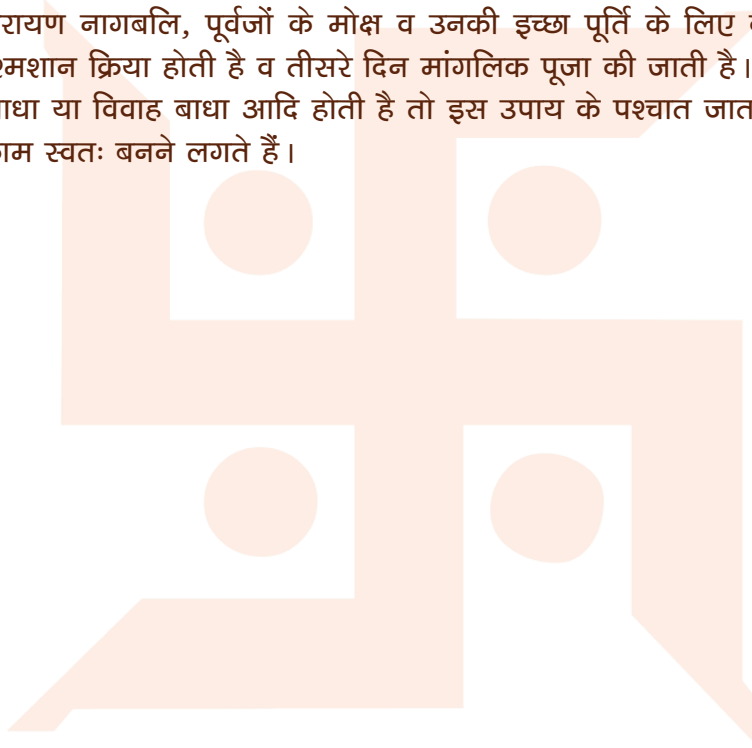
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, पत्नी और सन्तान से प्रेम करने वाला, कवि, क्रोधी, लोभी, संगीतज्ञ, बात को शीघ्र समझने वाला एवं स्वार्थी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

सप्तमभाव में गुरु हो तो जातक सुन्दर, धैर्यवान्, भाग्यवान्, प्रवासी, सन्तोषी, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, ज्योतिषी, नम्र, विद्वान् वक्ता एवं प्रधान होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं क्रूर होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(04/10/2023 - 04/10/2030)

मंगल की महादशा 04/10/2023 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 04/10/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नहीं होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता बाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन

लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सद्वा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(01/03/2024 - 20/03/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 01/03/2024 को प्रारंभ होकर 20/03/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि या अन्य अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता के माध्यम से धनागम हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा। अचानक अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं। आप प्रसिद्ध हो सकते हैं; अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। विभिन्न धर्मों के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी का जीवन सफल रहेगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी, उन्हें सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई-बहनों को अचानक लाभ हो सकता है; वे परिवार से थोड़े दिनों के लिए दूर जा सकते हैं। उनके व्यापार में प्रगति होगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, खेलकूद में दिलचस्पी लेंगे।

आपकी संतान के स्थान में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में प्रगति होगी, विदेश जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित स्थान से मदद मिल सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी में लाभ होगा।

व्यापारी सफल रहेंगे, धनलाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की पूजा शनिवार को भैरवजी के रूप में करें।

अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(20/03/2025 - 24/02/2026)

आपकी मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/03/2025 को प्रारंभ होकर 24/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। चुनाव और अदालत में विजयी होंगे। नौकरी में उच्चाधिकारियों से लाभ और प्रोन्नति का योग है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, मित्र बढ़ेंगे और कार्य पूर्ण होंगे। शिक्षा, लेखन, यात्रा और प्रकाशन के लिए समय शुभ है। आकांक्षाओं की

पूर्ति होगी, विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा, सम्मान और धन प्राप्त होंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, धन का लाभ होगा। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं। भाई-बहनों के घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं।

आपकी संतान परीक्षा में सफल होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता चुनाव में विजयी हो सकते हैं; कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। बदपरहेजी से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(24/02/2026 - 04/04/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/10/2023 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/02/2026 को प्रारंभ होकर 04/04/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। जिम्मेदारी बढ़ सकती है। समृद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता मिलेगी, उच्च पद प्राप्त होगा। गंभीर अध्ययन में व्यस्त रह सकते हैं। लेखन या शोध में मन लग सकता है।

आपके जीवनसाथी व्यापार में प्रगति करेंगे। आपके पिता जायदाद क्रय कर सकते हैं, उनकी प्रोन्नति होगी, सर्जनात्मक कार्य करेंगे। माता की समृद्धि में वृद्धि होगी। आपके भाई-बहन सफल होंगे, वे बुद्धिमानी से निवेश करेंगे और उनके प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में परिश्रम करेगी; उन्हें उच्चशिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो प्रसिद्धि और वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा मगर सुस्ती और निराशा से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि महाराज की स्तुति करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(04/04/2027 - 01/04/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 04/04/2027 को प्रारंभ होकर 01/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में बहुत उन्नति करेंगे। विज्ञान, संचार माध्यम और व्यापार में लाभ होगा। उच्चाधिकारी आपके कार्य की प्रशंसा करेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। अचल संपत्ति मिल सकती है, निवास सुविधाजनक होगा। पराविद्या में रुचि होगी। बहुत से मित्र होंगे, समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी को सब सुख उपलब्ध रहेंगे। पिता धन कमाएंगे; घर पर सुविधाएं रहेंगी, साहित्य से जुड़ सकते हैं। माता को भागीदारी में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी; शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाता खूब उन्नति करेंगे। व्यापारियों को निवेश करना पड़ सकता है।

स्नायुतंत्र और त्वचा के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(01/04/2028 - 28/08/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/04/2028 को प्रारंभ होकर 28/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप नेता बनेंगे। चुनाव में या मुकदमे में जीत सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। अध्यात्म और दर्शन में रुचि हो सकती है। मितव्ययता द्वारा धन का संचय करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप साहसी, लोकप्रिय और बुद्धिमान होंगे। अचल संपत्ति, भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। प्रसन्नचित्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, परिवार में खुशी रहेगी। आपके पिता खुश रहेंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपकी माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है; यात्रा और धनलाभ का योग है। आपके भाई-बहनों के जीवन में अप्रत्याशित

परिवर्तन हो सकते हैं; साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा, खर्च बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी, वाक्चातुर्य और बहस में उत्तम होंगे, शिक्षा में नाम कमाएंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को धन का लाभ होगा जबकि व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ मिलेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कंबल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(28/08/2028 - 28/10/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 28/08/2028 को प्रारंभ होकर 28/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन समृद्ध होंगे; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की संस्थाओं में दान दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(28/10/2029 - 05/03/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 04/10/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 28/10/2029 को प्रारंभ होकर 05/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा,

स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी होंगे, साख उत्तम रहेगी। लोकप्रियता और प्रसिद्धि बढ़ेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतिस्पर्धियों और शत्रुओं पर विजयी होंगे। धन प्राप्त होगा। घरेलू सुख, भूमि-भवन आदि क्रय का योग है। पैतृक संपत्ति भी प्राप्त हो सकती है।

जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है, धन का निवेश कर सकते हैं, कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। आपके पिता को सरकार से लाभ होगा। माता को व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। भाई-बहनों को अप्रत्याशित लाभ, विरासत या बीमे से धन प्राप्ति के संकेत हैं।

आपकी संतान शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगी, उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर वे सेवारत हैं तो औषधि और खाद्य सामग्री से संबंधित कार्यों में सफलता संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद, धन और सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार, थकान आदि संभव हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।